Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

प्राचीन भारत

(मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: MPPM02

दृष्टि The Vision

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

प्राचीन भारत

(मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

दूरभाष : 87501 87501, 011-47532596

टोल फ्री : 1800-121-6260

Web : www.drishtiIAS.com

E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को “like” करें

www.facebook.com/drishtithevisionfoundation

www.twitter.com/drishtiias

MPPCS DLP

विषय सूची (Contents)

1.	**प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत**	**5-14**
1.1	पुरातात्त्विक स्रोत	7
1.2	साहित्यिक स्रोत	9
2.	**प्रागैतिहासिक काल**	**15-25**
2.1	प्राचीन भारतीय इतिहास का विकास	15
2.2	पुरापाषाण काल : आखेटक और खाद्य संग्राहक	15
2.3	मध्य पाषाण काल	17
2.4	नवपाषाण काल : कृषि और पशुपालन	18
2.5	ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ	21
3.	**हड़प्पा सभ्यता**	**26-42**
3.1	उद्‌भव एवं विस्तार	26
3.2	हड़प्पा सभ्यता का नगर नियोजन	31
3.3	हड़प्पाकालीन आर्थिक व्यवस्था	34
3.4	हड़प्पाकालीन सामाजिक व्यवस्था	35
3.5	हड़प्पाकालीन धार्मिक व्यवस्था	36
3.6	स्थापत्य एवं कला	37
3.7	हड़प्पा सभ्यता का पतन	38
4.	**वैदिक काल**	**43-60**
4.1	ऋग्वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व – 1000 ईसा पूर्व)	43
4.2	उत्तर वैदिक काल (1000 ईसा पूर्व – 600 ईसा पूर्व)	51
5.	**छठी शताब्दी ईसा पूर्व का काल (महाजनपद काल)**	**61-89**
5.1	धार्मिक आंदोलन: जैन धर्म व बौद्ध धर्म	61
5.2	महाजनपद तथा मगध साम्राज्य का अभ्युदय	80
5.3	विदेशी आक्रमण	84
6.	**मौर्य साम्राज्य**	**90-111**
6.1	चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार, अशोक	91
6.2	मौर्य साम्राज्य की प्रकृति	98
6.3	मौर्य प्रशासन	99
6.4	मौर्यकालीन समाज	102
6.5	मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था	102
6.6	मौर्यकालीन कला	104
6.7	पतन के कारण	105
7.	**मौर्योत्तर काल**	**112-126**
7.1	शुंग वंश, कण्व वंश, चेदि तथा सातवाहन वंश	112
7.2	हिंद-यवन या बैक्ट्रीयाई आक्रमण	115

	7.3 शक शासक	115
	7.4 पह्लव वंश या पार्थियन साम्राज्य	116
	7.5 कुषाण	116
	7.6 मौर्योत्तरकालीन राजव्यवस्था एवं प्रशासन	117
	7.7 मौर्योत्तरकालीन समाज	118
	7.8 मौर्योत्तरकालीन अर्थव्यवस्था	119
	7.9 मौर्योत्तरकालीन कला एवं साहित्य	121
8.	**संगम काल**	**127-133**
	8.1 संगम साहित्य	127
	8.2 संगमकालीन राजनीतिक इतिहास	128
	8.3 संगमकालीन शासन व्यवस्था	129
	8.4 सामाजिक स्थिति	130
	8.5 अर्थव्यवस्था	130
9.	**गुप्त साम्राज्य**	**134-150**
	9.1 प्रारंभिक शासक	134
	9.2 गुप्त प्रशासन	136
	9.3 गुप्तकालीन समाज	137
	9.4 गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था	138
	9.5 गुप्तकालीन साहित्य	139
	9.6 कला एवं स्थापत्य	140
	9.7 स्वर्णयुग की अवधारणा	143
	9.8 पतन के कारण	144
10.	**गुप्तोत्तर काल**	**151-161**
	10.1 प्रमुख राजवंश	151
	10.2 थानेश्वर का पुष्यभूति (वर्धन) वंश	152
	10.3 गुप्तोत्तरकालीन सामाजिक स्थिति	156
	10.4 गुप्तोत्तरकालीन राजनीतिक व्यवस्था	157
	10.5 गुप्तोत्तरकालीन अर्थव्यवस्था	157
	10.6 गुप्तोत्तरकालीन धर्म	158
11.	**दक्षिण भारत**	**162-170**
	11.1 चालुक्य वंश	162
	11.2 पल्लव वंश	164
12.	**भारत का एशियाई देशों से सांस्कृतिक संबंध**	**171-177**
13.	**पूर्व मध्यकालीन भारत**	**178-196**
	13.1 पाल, गुर्जर-प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट वंश	178
	13.2 त्रिपक्षीय संघर्ष	181
	13.3 चोल राजवंश	184
	13.4 भारत पर अरब आक्रमण	191

अध्याय 1

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत (Sources of Ancient Indian History)

इतिहासकार एक वैज्ञानिक की भाँति उपलब्ध सामग्री की समीक्षा करके अतीत का सही चित्रण करने का प्रयास करता है। उसके लिये साहित्यिक सामग्री, पुरातात्त्विक साक्ष्य और विदेशी यात्रियों के यात्रा-वृत्तांत सभी का महत्त्व है। प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिये पूर्णतः शुद्ध ऐतिहासिक सामग्री विदेशों की अपेक्षा अल्प मात्रा में उपलब्ध है। यद्यपि भारत में यूनान के हेरोडोटस या रोम के लिवी जैसे इतिहासकार नहीं हुए, अतः कुछ पाश्चात्य विद्वानों की यह मानसिक धारणा बन गई थी कि भारतीयों को इतिहास की समझ ही नहीं थी। लेकिन, ऐसी धारणा बनाना भारी भूल होगी। वस्तुतः प्राचीन भारतीय इतिहास की संकल्पना आधुनिक इतिहासकारों की संकल्पना से पूर्णतः अलग थी। वर्तमान इतिहासकार ऐतिहासिक घटनाओं में कारण-कार्य संबंध स्थापित करने का प्रयास करते हैं लेकिन प्राचीन इतिहासकार केवल उन घटनाओं या तथ्यों का वर्णन करता था जिनमें आम जनमानस को कुछ सीखने को मिल सके। महाभारत में इतिहास की जो संकल्पना दी गई है उससे भारतीयों की इतिहास विषयक संकल्पना उद्भासित होती है। महाभारत के अनुसार ऐसी प्राचीन लोकप्रिय कथा जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की व्यावहारिक शिक्षा मिल सके, 'इतिहास' कहलाती है। प्राचीन युग में भारतीय धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों को जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक समझते थे। इसीलिये प्राचीन भारत का इतिहास राजनीतिक कम और सांस्कृतिक अधिक है। भारतीय इतिहासकारों का दृष्टिकोण पूर्णतया धर्मपरक था, किंतु धर्म के अतिरिक्त अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक कारण थे जिन्होंने भारत में अनेक आंदोलनों, संस्थाओं और विचारधाराओं को जन्म दिया। अतः भारतीय इतिहास का सार्वभौमिक स्वरूप जानने के लिये इन तथ्यों का अध्ययन करना आवश्यक है।

आधुनिक इतिहासकारों ने इतिहास में केवल राजनीतिक तथ्यों का वर्णन करना ही अपना कर्त्तव्य नहीं समझा बल्कि उनके वर्णन में आम जनमानस भी उतना ही महत्त्व रखते हैं जितना कि सम्राटों अथवा साम्राज्यों के उत्थान और पतन। वह उन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं बौद्धिक परिवर्तनों का विश्लेषण एवं अध्ययन करता है, जिनके द्वारा मनुष्य उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके अपने जीवनकाल को पूर्व की अपेक्षा अधिक सुखमय बनाने का प्रयत्न करता है। अतः प्रसिद्ध इतिहासकार डी.डी. कोसांबी के अनुसार, "उत्पादन के साधनों और उनके पारस्परिक संबंधों का तिथि क्रमानुसार अध्ययन करने से ही विकास के कालक्रम की विस्तृत जानकारी मिल सकती है।" उनके अनुसार, इसके आधार पर हम यह जान सकते हैं कि जनसाधारण किस प्रकार अपना जीवन-यापन करता था।

भारतीय इतिहास के काल को तीन भागों में बाँटकर देखा जा सकता है– वह काल जिसके लिये कोई लिखित साधन उपलब्ध नहीं है और जिसमें मनुष्य का जीवन अपेक्षाकृत पूर्णतः सभ्य नहीं था, 'प्रागैतिहासिक काल' कहलाता है। इतिहासकार उस काल को 'ऐतिहासिक काल' का नाम देते हैं जिसके लिये लिखित साक्ष्य उपलब्ध हैं और जिसमें मनुष्य सभ्य बन गया था। प्राचीन भारतीय इतिहास में लिखित साधन उपलब्ध तो हैं लेकिन वे अस्पष्ट और गूढ़ लिपि में हैं जिनका अर्थ निकालना कठिन है। इस काल को भारतीय इतिहासकार आद्य ऐतिहासिक काल का इतिहास कहते हैं। सैंधव संस्कृति की गणना 'आद्य ऐतिहासिक काल' के अंतर्गत की जाती है। इसी आधार पर हड़प्पा संस्कृति से पूर्व का भारतीय इतिहास 'प्रागैतिहासिक' और लगभग ईसा पूर्व 600 के बाद का इतिहास 'ऐतिहासिक काल' कहलाता है क्योंकि भारत में प्राचीनतम लिखित साक्ष्य अशोक के अभिलेख हैं जिनका काल ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी है और इस भाषा के विकास में भी लगभग 300 वर्ष लगे होंगे।

प्रागैतिहासिक काल का इतिहास लिखते समय इतिहासकार को पूर्णतया पुरातात्त्विक साक्ष्यों पर निर्भर रहना पड़ता है। आद्य इतिहास लिखते समय वह पुरातात्त्विक एवं साहित्यिक दोनों प्रकार के साधनों का उपयोग करता है तथा इतिहास लिखते समय वह इन दोनों साधनों के अतिरिक्त विदेशी लेखकों के वर्णनों का प्रयोग करता है। विदेशी यात्रियों के वर्णन भी साहित्यिक साधन हैं लेकिन उनकी उपयोगिता के विस्तृत वर्णन की आवश्यकता के कारण उनका वर्णन अलग शीर्षक के अंतर्गत किया गया है। इन सभी ऐतिहासिक साक्ष्यों का उपयोग करके इतिहासकार काल विशेष का ठीक-ठीक चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

अतः हम सुविधा के लिये भारतीय इतिहास को जानने के साधनों को दो शीर्षकों में रख सकते हैं–

- पुरातात्त्विक स्रोत
- साहित्यिक स्रोत।

(ख) **चीनी यात्रियों के विवरण** ***(Description by Chinese Travellers):*** चीनी यात्रियों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण फाह्यान, ह्वेनसांग और इत्सिंग के वर्णन हैं। इनके वर्णन चीनी भाषा में अभी तक उपलब्ध हैं तथा इनके अंग्रेज़ी अनुवाद कर दिये गए हैं। फाह्यान 5वीं शती ईसवी में भारत आया था और 14 वर्ष भारत में रहा तथा उसने विशेष रूप से भारत में बौद्ध धर्म की स्थिति के विषय में लिखा। ह्वेनसांग हर्ष के शासनकाल में भारत आया था और वह 16 वर्ष भारत में रहा। ह्वेनसांग का यात्रा विवरण 'सि-यू-की' के नाम से प्रसिद्ध है। उसने धार्मिक अवस्था के साथ-साथ तत्कालीन राजनीतिक दशा का भी वर्णन किया है तथा हर्ष, भास्कर वर्मन आदि के विषय में लिखा है। किंतु इनका दृष्टिकोण ज़्यादातर धार्मिक ही था, जिसका इनके वर्णन पर स्पष्टत: प्रभाव दिखाई पड़ता है। चीनी लेखक भारत का उल्लेख 'यिन-तु' के नाम से करते हैं। इसके अतिरिक्त मात्वालिन नामक चीनी यात्री ने चालुक्यों के शासनकाल में भारत-चीन संबंधों का विवरण अपने यात्रा-वृत्तांत में दिया है। इत्सिंग 671 ई. में भारत आया, उसने अपने विवरण में नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा उस समय के भारत की स्थिति का वर्णनि किया है।

(ग) **अरब यात्रियों के विवरण** ***(Description by Arabian Travellers):*** अरब यात्रियों ने लगभग 8वीं शताब्दी से भारत के विषय में वर्णन करना शुरू कर दिया था। सुलेमान 9वीं शती ईसवी के मध्य भारत आया था तथा इसने पाल और प्रतिहार राजाओं के विषय में लिखा है। अल मसूदी 941 ई. से 943 ई. तक भारत में रहा। उसने राष्ट्रकूट राजाओं की महत्ता के विषय में लिखा है। अरब यात्रियों के विवरण में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान अबूरिहान का है। उसका दूसरा नाम अलबरूनी था। वह महमूद गज़नवी का समकालीन था। उसने संस्कृत भाषा सीखी और भारत की सभ्यता एवं संस्कृति को पूर्ण रूप से जानने का प्रयत्न किया। उसका महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'तहकीक-उल-हिंद' है और इसमें भारत का बहुत तर्कसंगत और पूर्ण वर्णन है। अलबरूनी ने भारतीय गणित, भौतिकी, रसायनशास्त्र, सृष्टिशास्त्र, ज्योतिष, भूगोल, दर्शन, धार्मिक क्रियाओं, रीति-रिवाज़ों और सामाजिक विचारधारा का महत्त्वपूर्ण वर्णन किया है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि इतिहास लेखन में ग्रंथों, सिक्कों, अभिलेखों और पुरातत्त्व आदि से प्राप्त साक्ष्यों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक इतिहासकार काल विशेष से संबंध रखने वाली साहित्यिक तथा पुरातात्त्विक सामग्री का उपयोग करके सही चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है। साहित्यिक स्रोतों का उपयोग करते समय वह उस काल की विचारधारा का ध्यान रखता है जिससे प्रेरित होकर लेखक ने अपने ग्रंथों की रचना की थी।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के मुख्यत: तीन स्रोत हैं- **पुरातात्त्विक स्रोत, साहित्यिक स्रोत** तथा **विदेशी यात्रियों के विवरण।**
- अभिलेख के अध्ययन को **पुरालेखशास्त्र (एपिग्राफी)** कहते हैं।
- सबसे पुराने अभिलेख हड़प्पा सभ्यता की मुहरों पर मिलते हैं, ये लगभग 2500 ईसा पूर्व के हैं। ये अब तक नहीं पढ़े जा सके हैं।
- सबसे पुराने अभिलेख जो पढ़े जा चुके हैं वे हैं, ईसा पूर्व तीसरी सदी के **अशोक के शिलालेख।** सर्वप्रथम 1837 में **जेम्स प्रिंसेप** ने इन्हें पढ़ने में सफलता पाई।
- सिक्कों के अध्ययन को **मुद्राशास्त्र (न्यूमिस्मेटिक्स)** कहते हैं।
- सर्वप्रथम **'भारतवर्ष'** का उल्लेख **हाथीगुंफा** अभिलेख में हुआ है।
- 1400 ईसा.पूर्व. के **बोगजकोई अभिलेख** टर्की (एशिया माइनर) से वैदिक देवता **इंद्र, मित्र, वरुण** और **नासत्य** (अश्विनी कुमार) के नाम मिलते हैं। इसी के आधार पर आर्यों के एशिया माइनर से भारत आने की संकल्पना विकसित हुई।
- मध्य भारत में भागवत् धर्म विकसित होने का प्रमाण यवन राजदूत **'हेलियोडोरस' के बेसनगर (विदिशा) गरुड़ स्तंभ लेख** से प्राप्त होता है।
- सर्वप्रथम दुर्भिक्ष की जानकारी देने वाला अभिलेख **सोहगौरा** ताम्रपत्र अभिलेख है।

- भारत पर होने वाले हूण आक्रमण की जानकारी **भीतरी स्तंभ लेख** से प्राप्त होती है।
- सती प्रथा का पहला लिखित साक्ष्य **एरण अभिलेख** (शासन भानुगुप्त) से प्राप्त होता है।
- सर्वप्रथम सिक्कों पर लेख लिखने का कार्य यवन शासकों ने किया।
- सर्वप्राचीन भारतीय धर्मग्रंथ **वेद** हैं। वेद चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद।
- सबसे प्राचीन वेद **ऋग्वेद** एवं सबसे बाद का वेद **अथर्ववेद** है।
- भारतीय ऐतिहासिक कथाओं का सबसे अच्छा क्रमबद्ध विवरण **पुराणों में** मिलता है। इनकी संख्या **18** है। पुराणों में **मत्स्यपुराण सबसे प्राचीन** एवं **प्रामाणिक** है। कालिका पुराण का संबंध शाक्त धर्म से है। कालिका पुराण को कलि पुराण भी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि कालिका पुराण का संकलन असम क्षेत्र में किया गया था। इसमें मार्कण्डेय का भी उल्लेख मिलता है।
- स्मृतियों में **सबसे प्राचीन** एवं **प्रामाणिक 'मनुस्मृति'** मानी जाती है। यह **शुंग काल** का मानक ग्रंथ है।
- जातक में **बुद्ध के पूर्वजन्म** की कहानी वर्णित है। जैन साहित्य को **आगम** कहा जाता है।
- आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया की स्थापना अलेकलेंडर कनिंघम द्वारा 1861 में की गयी थी इसी कारण अलेकजेंडर कनिंघम को भारतीय पुरातत्व का पिता कहा जाता है।
- **'अर्थशास्त्र'** के लेखक **चाणक्य (कौटिल्य)** हैं। इससे मौर्यकालीन इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है।
- प्रमुख यूनानी-रोमन लेखकों में **टीसियस**, **हेरोडोटस**, **मेगास्थनीज**, **टॉलमी**, **प्लिनी** आदि हैं।
- हेरोडोटस को **'इतिहास का पिता'** कहा जाता है। इनकी प्रसिद्ध पुस्तक **हिस्टोरिका** में 5वीं शताब्दी ईसा.पूर्व. के प्लिनी ने भारत-फारस के संबंध का वर्णन है।
- नेचुरल हिस्टोरिया या नेचुरल हिस्ट्री पुस्तक लिखी।
- टॉलमी ने दूसरी शताब्दी में **'भारत का भूगोल'** नामक पुस्तक लिखी।
- प्रमुख चीनी लेखकों में **फाह्यान**, **संगयुन** (518 ई. में भारत आया) व **ह्वेनसांग** हैं। **ह्वेनसांग** का भ्रमण-वृत्तांत **'सि-यू-की'** नाम से प्रसिद्ध है। ह्वेनसांग ने **हर्षकालीन** समाज, धर्म तथा राजनीति के बारे में वर्णन किया है।
- ह्वेनसांग के अध्ययन के समय नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य **शीलभद्र** थे।
- अरबी लेखकों में **अलबरूनी** (पुस्तक: **किताब-उल-हिन्द**) और **इब्नबतूता** (पुस्तक: **रेहला/रिहूला**) प्रमुख हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. परमार राजवंश के इतिहास पर प्रकाश डालने वाला स्रोत कौन-सा/से है? **M.P.P.C.S. (Pre) 2019**
   (a) पद्मगुप्त का नवसाहसाड्क चरित
   (b) मेरूतुंग की प्रबंध चिन्तामणी
   (c) उदयपुर प्रशस्ति
   (d) उपर्युक्त सभी
2. निम्नलिखित में से कौन-सा ब्राह्मण ग्रंथ ऋग्वेद से संबंधित है? **M.P.P.C.S. (Pre) 2017**
   (a) ऐतरेय ब्राह्मण
   (b) गोपथ ब्राह्मण
   (c) शतपथ ब्राह्मण
   (d) तैत्तिरीय ब्राह्मण
3. भारतीय पुरातत्त्व का जनक किसे कहा जाता है? **M.P.P.C.S. (Pre) 2017**
   (a) अलेक्जेंडर कनिंघम (b) जॉन मार्शल
   (c) मार्टिमर व्हीलर (d) जेम्स प्रिंसेप
4. 'इंडिका' का लेखक कौन था? **M.P.P.C.S. (Pre) 2015**
   (a) प्लूटार्क (b) जस्टिन
   (c) हेरोडोटस (d) मेगास्थनीज
5. अभिलेखों में किस शासक का उल्लेख 'पियदस्सी' एवं 'देवानामप्रिय' के रूप में किया गया है? **M.P.P.C.S. (Pre) 2015**
   (a) चंद्रगुप्त मौर्य (b) अशोक
   (c) समुद्रगुप्त (d) हर्षवर्धन

6. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये-

सूची-I (अभिलेख)	सूची-II (शासक)
A. हाथीगुंफा अभिलेख	1. खारवेल
B. नासिक अभिलेख	2. गौतमी बलश्री
C. प्रयाग अभिलेख	3. समुद्रगुप्त
D. ऐहोल अभिलेख	4. पुलकेशिन द्वितीय

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	1	2	4	3
(c)	2	1	3	4
(d)	2	1	4	3

7. रघुवंशम् के रचनाकार कौन हैं?
   (a) कल्हण (b) कालिदास
   (c) कामंदक (d) अमर सिंह

8. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये-

सूची-I (रचना)	सूची-II (रचनाकार)
A. अष्टाध्यायी	1. पाणिनि
B. महाभाष्य	2. पतंजलि
C. मुद्राराक्षस	3. विशाखदत्त
D. अर्थशास्त्र	4. कौटिल्य

	A	B	C	D
(a)	2	1	3	4
(b)	1	2	3	4
(c)	4	3	2	1
(d)	3	4	2	1

9. वृहत्कथामंजरी के रचनाकार कौन हैं?
   (a) सोमदेव (b) कौटिल्य
   (c) कालिदास (d) क्षेमेंद्र

10. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये–
    1. यूनान और रोम के लेखकों में सबसे प्राचीन टेसियस और हेरोडोटस के वृत्तांत हैं।
    2. फाह्यान और ह्वेनसांग अरब के यात्री थे जो गजनवी के साथ भारत आए थे।

उपरोक्त कथनों में कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

11. सर्वप्रथम भारतवर्ष का उल्लेख किस अभिलेख में है?
    (a) बोगजकोई अभिलेख
    (b) हाथीगुंफा अभिलेख
    (c) नासिक अभिलेख
    (d) ऐहोल अभिलेख

12. अशोक के अभिलेख को सर्वप्रथम किसने पढ़ा?
    (a) कनिंघम (b) मार्शल
    (c) जेम्स प्रिंसेप (d) फेयर सर्विस

13. हूण आक्रमण की जानकारी किस अभिलेख से मिलती है?
    (a) भीतरी स्तंभ लेख (b) हाथीगुंफा अभिलेख
    (c) नासिक अभिलेख (d) ऐहोल अभिलेख

14. भारतीय इतिहास को जानने के साधनों में सम्मिलित तत्त्व है/हैं–
    1. पुरातत्त्व-संबंधी साक्ष्य
    2. साहित्यिक साक्ष्य
    3. विदेशी यात्रियों के विवरण

    कूट:
    (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
    (c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

15. 'नेचुरल हिस्ट्री' नामक पुस्तक के लेखक कौन हैं?
    (a) टॉलमी (b) मेगास्थनीज
    (c) प्लिनी (d) डाइमेकस

उत्तरमाला

1. (d) 2. (a) 3. (a) 4. (d) 5. (b) 6. (a) 7. (b) 8. (b) 9. (d) 10. (a)
11. (b) 12. (c) 13. (a) 14. (d) 15. (c)

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर 10-20 शब्दों/एक-दो पंक्तियों में दीजिये)

1. ऋग्वेद **M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
2. कालिदास **M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
3. मेगास्थनीज **M.P.P.C.S. (Mains) 2014**

4. राजतरंगिणी
5. अभिलेख
6. प्रागैतिहासिक काल
7. मृद्भांड

लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर 50 शब्दों या 5 से 6 पंक्तियों में दीजिये)

1. मुद्राशास्त्र
2. पुरालेखशास्त्र
3. हाथीगुंफा अभिलेख
4. ऐहोल अभिलेख
5. हेरोडोटस

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 100/200/300 शब्दों में दीजिये)

1. इतिहास के पुनर्निर्माण में विभिन्न प्रकार के स्रोतों के सापेक्षिक महत्त्व का विवेचन कीजिये।
2. साहित्यिक स्रोतों के साक्ष्य को अन्य स्रोतों से पुष्टि करना क्यों आवश्यक है?
3. प्राचीन इतिहास के निर्माण में साहित्यिक स्रोतों के योगदान की समीक्षा कीजिये।
4. प्राचीन इतिहास के अध्ययन में विदेशी यात्रियों का विवरण किस प्रकार सहायक हुआ है? समझाइये।

अध्याय 2

प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric Age)

पाषाण युग इतिहास का वह काल है जब मानव का जीवन पत्थरों (पाषाण) पर अत्यधिक आश्रित था। उदाहरण के लिये पत्थरों से शिकार करना, पत्थरों की गुफाओं में शरण लेना, पत्थरों से आग पैदा करना इत्यादि।

2.1 प्राचीन भारतीय इतिहास का विकास *(Development of the Ancient Indian History)*

भारतीय प्रागैतिहासिक काल के इतिहास को उद्घाटित करने का श्रेय **डॉ. प्राइमरोज** नामक एक अंग्रेज़ को जाता है। उन्होंने 1842 ई. में कर्नाटक के **रायचूर** ज़िले में लिंगसुगुर नामक स्थान पर प्रागैतिहासिक औज़ारों (पत्थर के औज़ार, तीर के फलक) की खोज की। प्राचीन भारत के इतिहास के विभिन्न कालों का वर्गीकरण एवं प्रमुख विशेषताएँ नीचे दिये गए चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत की गई हैं–

प्राचीन भारत का इतिहास

- **प्रागैतिहासिक काल**
  - लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं।
  - पुरातात्त्विक साक्ष्य उपलब्ध।
  - **उदाहरण :** पाषाणकाल
- **आद्य ऐतिहासिक काल**
  - लिखित साक्ष्य उपलब्ध।
  - लेकिन लिपि गूढ़ एवं अपठनीय।
  - **उदाहरण :** हड़प्पा सभ्यता
- **ऐतिहासिक काल**
  - पुरातात्त्विक एवं साहित्यिक दोनों साक्ष्यों के आधार पर निर्धारण।
  - **उदाहरण :** लगभग 600 ई.पू. के बाद का काल

पाषाणकाल:

- **पुरापाषाण काल** – लगभग प्रारंभ से 10 हज़ार ई.पू.
- **मध्यपाषाण काल** – लगभग 10 हज़ार ई.पू. से 5500 ई.पू. तक
- **नवपाषाण काल** – लगभग 5500 ई.पू. से 3000 ई.पू. तक

पुरापाषाण काल:

- **निम्न पुरापाषाण काल** (प्रारंभ से 1 लाख ई.पू.)
- **मध्य पुरापाषाण काल** (1 लाख ई.पू. से 40 हज़ार ई.पू.)
- **उच्च पुरापाषाण काल** (40 हज़ार ई.पू. से 10 हज़ार ई.पू.)

2.2 पुरापाषाण काल : आखेटक और खाद्य संग्राहक *(Palaeolithic Age : Hunter and Food Collector)*

पुरापाषाण संस्कृति का उदय अभिनूतन युग (Pleistocene) में हुआ था। इस युग में धरती बर्फ से ढकी हुई थी। भारतीय पुरापाषाण काल को मानव द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले पत्थरों के औज़ारों के स्वरूप और जलवायु में होने वाले परिवर्तन के आधार पर निम्न तीन अवस्थाओं में बाँटा जाता है–

(क) निम्न पुरापाषाण काल (प्रारंभ से 1 लाख ईसा.पूर्व.)
(ख) मध्य पुरापाषाण काल (1 लाख ईसा.पूर्व. से 40 हज़ार ईसा.पूर्व.)
(ग) उच्च पुरापाषाण काल (40 हज़ार ईसा.पूर्व. से 10 हज़ार ईसा.पूर्व.)

अध्याय
3

हड़प्पा सभ्यता (Harappan Civilization)

हड़प्पा सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक थी। यह भारतीय उपमहाद्वीप में प्रथम नगरीय क्रांति को दर्शाती है। इसका क्षेत्रीय विस्तार, नगर-नियोजन तथा सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता आदि इसे एक विशिष्ट सभ्यता के रूप में स्थापित करती है। यह **काँस्ययुगीन** सभ्यता थी। कार्बन डेटिंग पद्धति (C_{14}) के आधार पर इस सभ्यता का काल लगभग 2500 ईसा पूर्व–1750 ईसा पूर्व माना जाता है। हालाँकि भारत की वित्तमंत्री ने बजट (2020-21) पेश करते हुए यह कहा कि सिंधु सरस्वती (हड़प्पा) सभ्यता से प्राप्त मुहरें ईसा पूर्व 3300 साल पुरानी हैं यानी यदि यह सत्य है तो इस सभ्यता का काल और पहले तक होगा। और इन्होंने इस सभ्यता का काल 3300 ई.पू. से 1300 ई.पू. का माना है।

3.1 उद्भव एवं विस्तार *(Emergence and Expansion)*

नवीन शोध के अनुसार यह सभ्यता लगभग 8,000 साल पुरानी है। हड़प्पा सभ्यता के उद्भव को निम्नलिखित रूप से वर्गीकृत किया जाता है–

- हड़प्पा सभ्यता
  - उद्भव
    - विदेशी उत्पत्ति से संबंधित मत
    - द्रविड़ संस्कृति से उद्भव
    - आर्य संस्कृति से उद्भव
    - क्रमिक रूप से देशी उत्पत्ति का सिद्धांत

हड़प्पा सभ्यता का उद्भव *(Emergence of Harappan civilization)*

हड़प्पा सभ्यता का उद्भव ताम्रपाषाणिक पृष्ठभूमि पर भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में हुआ जो वर्तमान में भारत, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों में अवस्थित है। विस्तृत खोजों के बावजूद इस सभ्यता के उद्भव तथा विकास के संदर्भ में कोई ठोस जानकारी नहीं मिल पाई है। उद्भव की प्रक्रिया को जानने में कई सारी व्यावहारिक समस्याएँ हैं, जैसे- क्षैतिज उत्खनन का न होना, ऊर्ध्वाधर खनन भी जलस्तर के ऊपर तक होना, लिपि का अध्ययन नहीं हो पाना आदि।

इस प्रकार आवश्यक साक्ष्यों का अभाव, जैसे साहित्यिक स्रोतों का अनुपलब्ध होना एवं पुरातात्त्विक स्रोतों द्वारा अपर्याप्त सूचना देना हड़प्पा सभ्यता के उद्भव की व्याख्या में एक बड़ी समस्या है। इस कारण से इस सभ्यता के उद्भव के संबंध में विभिन्न इतिहासकारों ने भिन्न-भिन्न मत व्यक्त किये हैं।

1. विदेशी उत्पत्ति से संबंधित मत

इस मत के प्रतिपादक **मार्टिमर व्हीलर** और **गार्डन चाइल्ड** जैसे इतिहासकार हैं। इसके लिये इन्होंने **सांस्कृतिक विसरण** का सिद्धांत प्रयुक्त किया। अन्नागार, गढ़ी तथा बुर्ज में प्रयुक्त शहतीरों के आधार पर मेसोपोटामिया से संबंध जोड़ा जाता है। उसी प्रकार बलूचिस्तान से प्राप्त मिट्टी के ढेरों की तुलना मेसोपोटामिया से प्राप्त जिगुरत (मंदिर) से की गई है। इनका मानना है कि मेसोपोटामिया से नगरीय सभ्यता के गुण भारत पहुँचे, लेकिन पुरातात्त्विक साक्ष्य इसके विपरीत हैं। हड़प्पा नगर-योजना मेसोपोटामिया से कहीं अधिक विकसित थी। हड़प्पा में आग में पकी हुई जबकि मेसोपोटमिया में धुप में पकी हुई ईंटों का प्रचुर प्रयोग मिलता है। हड़प्पाई मुहर, लिपि, औज़ार, मृद्भांड आदि मेसोपोटामिया और मिस्र से भिन्न हैं। हड़प्पाई लिपि चित्रात्मक थी तो मेसोपोटामियाई लिपि कीलनुमा।

अतः हड़प्पा सभ्यता की मौलिकता के आधार पर कहा जा सकता है कि इसका उद्भव महज़ विदेशी प्रेरणा से नहीं हुआ, हालाँकि इस पर विदेशी प्रभाव को पूरी तरह से नकारा भी नहीं जा सकता है।

अध्याय
4

वैदिक काल
(Vedic Age)

हड़प्पा सभ्यता के पतन के पश्चात् भारत में जो नवीन संस्कृति प्रकाश में आई, उसके विषय में हमें संपूर्ण जानकारी वेदों से मिलती है। इसीलिये इस काल का नामकरण **"वैदिक काल"** के नाम से हुआ है। वेदों में भी ऋग्वेद सर्वप्राचीन होने के साथ-साथ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। चूँकि इस संस्कृति के प्रवर्तक आर्य लोग थे, इसलिये इसे कभी-कभी **आर्य सभ्यता या आर्य संस्कृति** का नाम भी दिया जाता है। यहाँ आर्य से अभिप्राय है **श्रेष्ठ, अभिजात, कुलीन** आदि। वैदिक काल अपने-आप में भारतीय इतिहास के लगभग हज़ार वर्ष (1500 ईसा पूर्व - 600 ईसा पूर्व) को समेटे हुए है। वैदिक काल का विभाजन ऋग्वैदिक या पूर्व वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व - 1000 ईसा पूर्व) तथा उत्तर वैदिक काल (1000 ईसा पूर्व - 600 ईसा पूर्व) के रूप में हुआ है।

वैदिक काल (1500-600 ई.पू.)

ऋग्वैदिक काल/पूर्व-वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.)

उत्तर-वैदिककाल (1000-600 ई.पू.)

4.1 ऋग्वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व - 1000 ईसा पूर्व)
[Rigvedic Age (1500 B.C. - 1000 B.C.)]

भारत में आर्यों (Aryans) के आरंभिक इतिहास के संबंध में जानकारी का प्रमुख स्रोत वैदिक साहित्य है। इस साहित्य के अलावा वैदिक युग (Vedic Age) के बारे में जानकारी का एक अन्य स्रोत पुरातात्त्विक साक्ष्य (Archaeological Evidences) हैं, लेकिन ये अपनी कतिपय त्रुटियों के कारण किसी स्वतंत्र अथवा निर्विवाद जानकारी का स्रोत न होकर साहित्यिक स्रोतों के आधार पर किये गए विश्लेषण की पुष्टि मात्र करते हैं।

मंडल	रचयिता
प्रथम मंडल	ऋषिगण
द्वितीय मंडल	गृत्समद
तृतीय मंडल	विश्वामित्र
चतुर्थ मंडल	वामदेव
पंचम मंडल	अत्रि
षष्ठ मंडल	भरद्वाज
सप्तम मंडल	वसिष्ठ
अष्ठम मंडल	कण्व एवं अंगिरस
नवम मंडल	पवमान अंगिरा (ऋषिगण)
दसवाँ मंडल	ऋषिगण

साहित्यिक स्रोत *(Literary sources)*

ऋग्वैदिक काल की जानकारी का एकमात्र साहित्यिक स्रोत ऋग्वेद है। इसकी रचना अनुमानतः 1500 ईसा पूर्व से 1000 ईसा पूर्व के मध्य मानी जाती है। इसमें 10 मंडल तथा 1028 सूक्त हैं। इसके कुल 10 मंडलों में से 2 से 7 तक प्राचीनतम अंश हैं। प्रथम और दशम मंडल सबसे बाद में जोड़े गए मालूम होते हैं। ऋग्वेद के दूसरे से सातवें मंडल को गोत्र मंडल (Clan Division) के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इन मंडलों की रचना किसी गोत्र (Clan) विशेष से संबंधित एक ही ऋषि (Sage) के परिवार ने की थी। इस वेद में 'आर्य' शब्द का उल्लेख 36 बार हुआ है। ऋग्वेद की अनेक बातें **अवेस्ता** से मिलती हैं। **अवेस्ता** ईरानी भाषा का प्राचीनतम ग्रंथ है। दोनों ग्रंथों में बहुत से देवताओं और सामाजिक वर्गों के नाम भी मिलते-जुलते हैं।

पुरातात्त्विक स्रोत *(Archaeological sources)*

1. **बोगजकोई अभिलेख या मितन्नी अभिलेख (टर्की/एशिया माइनर) (1400 ईसा पूर्व):**
   इस अभिलेख में हित्ती राजा सुब्बिलिमा और मितन्नी राजा मतिऊअजा के मध्य हुई संधि के साक्षी के रूप में वैदिक देवताओं– इंद्र, वरुण, मित्र और नासत्य का उल्लेख है।

अध्याय 5

छठी शताब्दी ईसा पूर्व का काल (महाजनपद काल) [Era of the Sixth Century B.C. (Mahajanpada Age)]

छठी शताब्दी ईसा पूर्व का काल भारतीय इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। भारत में इस शताब्दी में सभी क्षेत्रों में अपूर्व क्रांतियाँ हुईं और सर्वत्र एक नई चेतना का उदय हुआ। इसी शताब्दी में भारत में राज्यों के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हुई और मगध में साम्राज्यवाद की नींव पड़ी। इस काल से पूर्व का काल राजनीतिक अंतर्विरोधों का काल था। नवीन धर्मों यथा बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म का उदय इसी काल में हुआ। आर्थिक दृष्टि से भी यह क्रांति का युग था, फलतः द्वितीय नगरीकरण की प्रक्रिया भी इसी काल में सामने आई। लोक भाषाओं का उद्‌भव तथा सामाजिक-धार्मिक स्थिति में नियमन हेतु **सूत्र-साहित्य** की रचना भी इसी काल में हुई। इस बहुमुखी विकास के कारण ही इस काल का भारत के इतिहास में विशिष्ट स्थान है।

5.1 धार्मिक आंदोलन: जैन धर्म व बौद्ध धर्म *(Religious Movement: Jainism and Buddhism)*

ईसा पूर्व छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मध्य गंगा के मैदान में अनेक धार्मिक संप्रदायों का उदय हुआ। लगभग सभी धार्मिक संप्रदायों का विरोध धार्मिक व्यवस्था के विरुद्ध था। एक दृष्टि से अगर देखा जाए तो छठी शताब्दी ईसा पूर्व के ऐसे धर्म सुधार आंदोलन की पृष्ठभूमि उत्तर-वैदिक काल के अंत तक तैयार हो चुकी थी। तत्कालीन सामाजिक विद्वेष के वातावरण, आर्थिक क्षेत्र में हुए परिवर्तन, धार्मिक आडंबर आदि ने सुधार आंदोलन की भूमिका तैयार की। इस युग के लगभग 62 संप्रदाय (बौद्ध ग्रंथों के अनुसार) ज्ञात हैं, जिनमें बौद्ध धर्म (गौतम), जैन धर्म (महावीर), नियतिवाद (मक्खलि गोशाल) आदि प्रमुख हैं। इनमें से जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए, जिन्होंने अपने उपदेशों तथा कार्यों से समाज को प्रभावित किया। इन्होंने जहाँ वैदिक धर्म की कुरीतियों तथा अतिवादी पंथ की आलोचना की, वहीं सामाजिक समस्या के समाधान का विकल्प भी प्रस्तुत किया। यही कारण है कि इन पंथों की जड़ें भारतीय समाज तथा संस्कृति में गहरी पैठ बना सकीं।

उद्‌भव के कारण *(Cause of Emergence)*

वैदिकोत्तर काल में समाज स्पष्टतः चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) में विभाजित था तथा उनके कर्त्तव्य भी अलग-अलग निर्धारित थे। इस बात पर ज़ोर दिया जाता था कि वर्ण जन्ममूलक है। ब्राह्मण, जिन्हें पुरोहितों और शिक्षकों का कर्त्तव्य सौंपा गया था, समाज में अपना स्थान सबसे ऊँचा होने का दावा करते थे। वे कई विशेषाधिकारों के दावेदार थे, जैसे- दान लेना, करों से छुटकारा आदि। वर्णक्रम में क्षत्रियों का स्थान दूसरा था। वे शासन करते थे और किसानों से वसूले गए करों पर जीते थे। वैश्य खेती, पशुपालन और व्यापार करते थे और ये ही मुख्य करदाता थे। शूद्रों का कर्त्तव्य ऊपर के तीनों वर्णों की सेवा करना था और उन्हें वेद पढ़ने के अधिकार से वंचित रखा गया था। शूद्रों को स्वभाव से क्रूर, लोभी कहा गया है और उन्हें अस्पृश्य भी माना जाता था। वर्ण-व्यवस्था में जो जितने ऊँचे वर्ण का होता था, वह उतना ही शुद्ध और सुविधाकारी समझा जाता था।

यह स्वाभाविक ही था कि इस तरह के वर्ण-विभाजन वाले समाज में तनाव पैदा हो। वैश्यों और शूद्रों में इसकी कैसी प्रतिक्रिया थी, यह जानने का कोई साधन नहीं है। परंतु क्षत्रिय लोग, जो शासक के रूप में काम करते थे, ब्राह्मणों के धर्म विषयक प्रभुत्व पर प्रबल आपत्ति करते थे। ब्राह्मणों के विशेषाधिकारों के विरुद्ध क्षत्रियों का खड़ा होना नए धर्मों के उद्‌भव का एक प्रमुख कारण बना। जैन धर्म के प्रमुख वर्द्धमान महावीर और बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध दोनों क्षत्रिय वंश के थे और दोनों ने ब्राह्मणों की मान्यता को चुनौती दी।

600 ईसा पूर्व के आस-पास मध्य गंगा के मैदानों में लोहे का प्रयोग होने लगा और लोग भारी संख्या में बसने लगे। लोहे के औज़ारों का प्रयोग करके जंगलों की सफाई, खेती आदि संभव हुई। लोहे के फाल वाले हलों पर आधारित कृषि-मूलक

अध्याय 6

मौर्य साम्राज्य (Maurya Empire)

मौर्य साम्राज्य की जानकारी के लिये हमारे पास साहित्यिक और पुरातात्त्विक दोनों प्रकार के स्रोत उपलब्ध हैं। साहित्यिक स्रोतों में कौटिल्य का **अर्थशास्त्र**, विशाखदत्त की **मुद्राराक्षस**, मेगास्थनीज़ की **इंडिका**, बौद्ध साहित्य (दीपवंश, दिव्यावदान), जैन साहित्य और पुराण आदि महत्त्वपूर्ण हैं। वहीं पुरातात्त्विक स्रोतों में **अशोक के अभिलेख** और विभिन्न वस्तुओं के अवशेष जैसे– बर्तन, सिक्के आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

साहित्यिक स्रोत *(Literary Sources)*

- **अर्थशास्त्र–** कौटिल्य द्वारा रचित यह पुस्तक मौर्यकालीन राजनीति और शासन के बारे में सूचना देती है। कौटिल्य (चाणक्य), चंद्रगुप्त मौर्य (मौर्य वंश का संस्थापक) का **प्रधानमंत्री** था।
- **मुद्राराक्षस–** चंद्रगुप्त मौर्य के शत्रुओं के विरुद्ध चाणक्य ने जो चालें चलीं, उनकी विस्तृत कथा **मुद्राराक्षस** नामक नाटक में है, जिसकी रचना **विशाखदत्त** ने की है। साथ ही यह पुस्तक चंद्रगुप्त के समय की सामाजिक-आर्थिक दशा पर भी प्रकाश डालती है।
- **इंडिका–** मेगास्थनीज़ की इंडिका से हमें मौर्यों के विस्तृत प्रशासन तंत्र की सूचना मिलती है। इस पुस्तक से मौर्य काल के प्रशासन, समाज और अर्थव्यवस्था की जानकारी मिलती है।
- **बौद्ध साहित्य–** दीपवंश अशोक के बौद्ध धर्म को श्रीलंका तक फैलाने की भूमिका के बारे में बताते हैं। अन्य बौद्ध साहित्य (महावंश, दिव्यावदान) तथा जैन साहित्य (कल्पसूत्र, परिशिष्टपर्वन) से भी मौर्य साम्राज्य के विस्तार पर प्रकाश पड़ता है।
- पुराण मौर्य राजाओं और घटनाओं के बारे में बताते हैं।

पुरातात्त्विक स्रोत *(Archaeological sources)*

पुरातात्त्विक स्रोतों में अभिलेखों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनमें अशोक के अभिलेख, इससे पूर्व चंद्रगुप्त मौर्य के अभिलेख, रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख महत्त्वपूर्ण हैं जिसमें मौर्यकालीन राजनीतिक, प्रशासनिक, धार्मिक, सामाजिक आदि दशाओं का वर्णन मिलता है।

अशोक पूर्व के अभिलेखों में सोहगौरा तथा महास्थान का अभिलेख है, जो चंद्रगुप्त मौर्य के काल से संबंधित हैं। इससे पता चलता है कि मौर्य काल में दुर्भिक्ष पड़ता था। अशोक के अभिलेखों को हम निम्न तरीके से वर्गीकृत कर सकते हैं–

वृहद् शिलालेख– अशोक के 14 **वृहद् शिलालेख** से तात्पर्य अशोक के 14 आदेशों से है जो विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए हैं। ये स्थान हैं– कल्सी (देहरादून), शाहबाजगढ़ी, मानसेहरा, गिरनार, धौली, जौगढ़, सोपारा, एर्रगुड्डी, सन्नाती (कर्नाटक)। इसमें धौली और जौगढ़ में दो **पृथक् शिलालेख** भी खुदे हैं। **लघु शिलालेख** गुर्जरा, मास्की, भाब्रु आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं। अशोक के **स्तंभ-लेखों** की संख्या 7 है जो **दिल्ली-टोपरा, दिल्ली-मेरठ** सारनाथ, लौरिया नंदनगढ़, लौरिया अरेराज, कंधार, रामपुरवा जगहों से प्राप्त हुए हैं। राजकीय घोषणाओं के रूप में कुछ **लघु स्तंभलेख** साँची, कौशांबी, सारनाथ, रुम्मिनदेई से भी मिले हैं। बराबर की पहाड़ी में अशोक के गुहालेख भी मिले हैं।

अशोक के परवर्ती अभिलेखों में **रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख** से मौर्यकालीन सिंचाई व्यवस्था पर प्रकाश पड़ता है। पहली बार इसी अभिलेख में चंद्रगुप्त के लिये **मौर्य** शब्द का प्रयोग हुआ है।

मौर्यकालीन स्थलों की खुदाइयों से अनेक ऐसी वस्तुएँ मिली हैं, जो इस काल की झाँकी प्रस्तुत करती हैं। **कुम्हरार (आधुनिक पटना)** से प्राप्त भवनों में लकड़ी एवं पकी ईंटों के प्रयोग का पता चलता है। **दीदारगंज (पटना)** एवं **बेसनगर** से प्राप्त मूर्तियाँ मौर्यकाल की लोक-कला की सूचना देती हैं।

अध्याय
7

मौर्योत्तर काल
(Post-Mauryan Age)

मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् भारत की राजनीतिक एकता नष्ट हो गई। मौर्य वंश के पतन और गुप्त वंश के उत्थान के बीच जो पाँच शताब्दियाँ बीती, उनमें बहुत राजनीतिक उथल-पुथल हुई। इस काल की राजनीतिक व्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण अभिलक्षण है- बहुराज्यीय व्यवस्था। इस व्यवस्था के अंतर्गत उत्तर भारत से दक्षिण भारत तक एक विशाल मौर्य साम्राज्य की जगह अनेक (छोटे-छोटे) राज्य दिखाई देते हैं। इनमें से कुछ राज्य, जैसे- कुषाण और सातवाहन, साम्राज्य के स्तर पर पहुँच गए और अधिकांश राज्य सीमित स्तर तक ही रहे। बहुराज्यीय व्यवस्था को प्रेरित करने वाले कारकों में प्रमुख थे- मौर्य साम्राज्य के विघटन के पश्चात् उत्तराधिकारी राज्यों का उद्भव (उदाहरण के लिये शुंग वंश), विदेशी आक्रमणों के परिणामस्वरूप स्थापित राज्य (उदाहरण के लिये इण्डो-ग्रीक राजवंश, शक, कुषाण आदि), नए क्षेत्रों में राज्य निर्माण इत्यादि।

7.1 शुंग वंश, कण्व वंश, चेदि तथा सातवाहन वंश
(Sung Dynasty, Kanva Dynasty, Chedi and Satavahana Dynasty)

शुंग वंश *(Sung dynasty)*

मौर्य वंश के उत्तराधिकारी शुंग वंश हुआ। इस वंश का संस्थापक **पुष्यमित्र शुंग** था। हर्षचरित के अनुसार उसने अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या कर मगध पर **शुंग वंश** की नींव डाली। उसे ब्राह्मणवंशीय माना जाता है। बौद्ध ग्रंथों में उसे बौद्ध विरोधी सिद्ध करने का प्रयास किया गया है। एक विवरण के अनुसार अशोक के द्वारा जिन 84 हज़ार स्तूपों का निर्माण कराया गया पुष्यमित्र शुंग ने उन्हें नष्ट कर दिया। किंतु यह महज़ साहित्यिक विवरण है, इस संबंध में पुरातात्त्विक विवरण कुछ और कहते हैं। इनके अनुसार पुष्यमित्र शुंग ने भरहुत स्तूप का निर्माण करवाया तथा साँची स्तूप में वेदिका स्थापित करवाई।

ऐसा माना जाता है कि पुष्यमित्र शुंग के काल में यवनों का निरंतर आक्रमण हो रहा था। उसने यवनों के विरुद्ध सफलता भी प्राप्त की थी तथा अयोध्या (धान) अभिलेख के अनुसार पुष्यमित्र ने अपनी विजय के उपलक्ष्य में दो बार अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न कराया था। यवन आक्रमण की चर्चा कालिदास कृत **'मालविकाग्निमित्रम्'**, पतंजलि के **'महाभाष्य'** आदि में मिलती है। लगभग 185 से 75 ईसा पूर्व के बीच शुंग वंश का शासन रहा था। इनके पूर्वज मूलतः उज्जैन से थे। शुंगों की राजधानी **विदिशा** तथा **पाटलिपुत्र** रही थी। पुराणों के अनुसार पुष्यमित्र शुंग के लगभग दस उत्तराधिकारियों ने शासन किया था। उसका निकटस्थ उत्तराधिकारी अग्निमित्र था जिसके सम्मान में कालिदास ने **मालविकाग्निमित्रम्** की रचना की। उसी का एक उत्तराधिकारी **भागभद्र** हुआ जिसके दरबार **(विदिशा)** में यूनानी शासक **एण्टियालकीट्स** ने **हेलियोडोरस** को भेजा था। **हेलियोडोरस** ने ही **वासुदेव कृष्ण** के सम्मान में **विदिशा (बेसनगर)** में **गरुड़ ध्वज** की स्थापना की। इस वंश का अंतिम शासक **देवभूति** था। इसकी हत्या 75 ईसा पूर्व में **वासुदेव** ने कर दी और मगध की गद्दी पर **कण्व वंश** की स्थापना की।

महाकवि कालिदास द्वारा रचित मालविकाग्निमित्रम् नाट्य ग्रंथ से यह ज्ञात होता है कि पुष्यमित्र शुंग का पुत्र, अग्निमित्र विदिशा का राज्यपाल था। उसने विदर्भ राज्य के राज्यपाल का कार्यभार अपने मित्र माधवसेन को सौपा।

कण्व वंश *(Kanva dynasty)*

अंतिम शुंग शासक देवभूति की हत्या उसके अमात्य वासुदेव ने की। इसकी जानकारी हर्षचरित से प्राप्त होती है। वासुदेव ने जिस नवीन वंश की स्थापना की उसे कण्व वंश के नाम से जाना जाता है। यह भी ब्राह्मण वंश था। कण्व वंश के अंतर्गत चार शासक हुए। वासुदेव, भूमिमित्र, नारायण और सुशर्मन। लगभग 75 ईसा पूर्व से 30 ईसा पूर्व तक कण्व वंश का शासन रहा। पुराणों के अनुसार कण्वों ने 45 वर्षों तक शासन किया। अंतिम शासक **सुशर्मन** की हत्या 30 ईसा पूर्व में **सिमुक** ने कर दी और एक नवीन ब्राह्मण वंश **सातवाहन वंश** की नींव डाली।

अध्याय
8

संगम काल (Sangam Age)

ऐतिहासिक काल के आरंभ में तमिलों के संबंध में जो कुछ जानकारी प्राप्त होती है, उसका स्रोत संगम साहित्य है। 'संगम' से तात्पर्य है **'कवियों का सम्मेलन'** जो संभवत: किसी सामंत या राजा के आश्रय में आयोजित होता था। ऐसे सम्मेलन में रचित साहित्य **संगम साहित्य** के नाम से जाना जाता है। ज्ञात स्रोतों के अनुसार **पांड्य शासकों** के अधीन तमिल क्षेत्र में **तीन संगमों** का आयोजन किया गया।

संगम	अध्यक्ष	संरक्षक	स्थल
प्रथम	अगस्त्य ऋषि	पाण्ड्य शासक	मदुरै
द्वितीय	तोलकाप्पियर (संस्थापक अध्यक्ष अगस्त्य ऋषि)	पाण्ड्य शासक	कपाट्पुरम
तृतीय	नक्कीरर	पाण्ड्य शासक	उत्तरी मदुरै

प्रथम संगम **मदुरै** नामक स्थान पर आयोजित हुआ जिसकी अध्यक्षता **अगस्त्य ऋषि** ने की थी। अगस्त्य ऋषि को ही **दक्षिण भारत** में **आर्य संस्कृति के प्रसार** का श्रेय दिया जाता है। इस संगम के सदस्यों की संख्या 549 थी। इन्हें 89 पाण्ड्य शासकों का संरक्षण मिला। प्रथम संगम की कोई रचना उपलब्ध नहीं है। यह संगम सबसे अधिक दिनों तक चला। द्वितीय संगम का आयोजन **कपाट्पुरम** नामक स्थान पर हुआ था जिसके अध्यक्ष प्रारंभ में **अगस्त्य ऋषि** थे, परंतु बाद में उनका स्थान उनके शिष्य **तोलकाप्पियर** ने ले लिया। इस संगम में कुल 49 सदस्य थे। इसे 59 पाण्ड्य शासकों का संरक्षण मिला। इसमें भी अनेक ग्रंथों की रचना हुई किंतु तोलकाप्पियर द्वारा रचित तोलकाप्पियम को छोड़कर शेष सारी रचनाएँ नष्ट हो गईं। उसी प्रकार तृतीय संगम का आयोजन **उत्तरी मदुरै** में हुआ। इसकी **अध्यक्षता नक्कीरर** ने की थी। इसमें 49 सदस्य थे। इन्हें 49 पाण्ड्य राजाओं का संरक्षण मिला तथा कुल 449 कवियों को उनकी रचनाओं के प्रकाशन की अनुमति मिली। ईसा की आठवीं सदी में लिखी गई संगम की तमिल टीकाओं में कहा गया है कि तीनों संगम 9,990 वर्षों तक चलते रहे। उनमें 8,598 कवियों ने भाग लिया और 197 पाण्ड्य राजा उनके संपोषक हुए। प्रथम संगम 4,400 वर्षों तक, द्वितीय संगम 3,700 वर्षों तक, एवं तृतीय संगम लभग 1,850 वर्षों तक चला। इन्हें अतिरंजना मात्र माना गया है, सिर्फ इतना ही कहा जा सकता है कि मदुरै में संगम राजाश्रय में आयोजित होते थे। इन सम्मेलनों द्वारा रचित संगम साहित्य जो उपलब्ध है, लगभग 300 ई. और 600 ई. के बीच संकलित किया गया।

8.1 संगम साहित्य *(Sangam Literature)*

अन्वेषण करने पर ज्ञात होता है कि संगम साहित्य का विकास लगभग एक सहस्राब्दी के लंबे काल में हुआ तथा यह क्रमिक रूप में विकसित होता रहा।

संगम साहित्य को मोटे तौर पर दो समूहों में बाँटा जा सकता है- **आख्यानात्मक** और **उपदेशात्मक**। आख्यानात्मक ग्रंथ **'मेलकणक्कु'** अठारह मुख्य ग्रंथ कहलाते हैं। इसके अंतर्गत आठ पद्य संकलन और दस ग्राम्य गीत शामिल हैं। यह साहित्य दक्षिण भारत के परिवेश में ही विकसित हुआ किंतु इस पर उत्तर भारत का भी प्रभाव माना जा सकता है। यद्यपि उत्तर का सीमित प्रभाव है। उदाहरण के लिये वर्ण-व्यवस्था की चर्चा एवं आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख आदि पर उत्तर भारत का प्रभाव रेखांकित किया जा सकता है।

पुस्तक एवं लेखक	
पुस्तक	**लेखक**
शिल्पादिकारम्	इलांगोआदिगल
मणिमेखलै	सीतलैसत्तनार
जीवकचिंतामणि	तिरुतक्कदेवर
तिरुमुरुकात्रुप्पदै	नक्कीरर

उपदेशात्मक ग्रंथ **'कीलकणक्कु'** अठारह लघु ग्रंथ कहलाते हैं। इन ग्रंथों में **तिरुकुरल** तथा **नलदियार** प्रमुख हैं। इन ग्रंथों में **तिरुवल्लुवर** द्वारा रचित **'तिरुकुरल'** अथवा **'कुरल'** सबसे उत्कृष्ट

अध्याय
9

गुप्त साम्राज्य (Gupta Empire)

तीसरी सदी में उत्तर भारत में कुषाणों तथा दक्कन में सातवाहनों के प्रभुत्व के अवसान के साथ देश में राजनीतिक विघटन का दौर आरंभ हुआ। ज्ञात होता है कि कुषाणों के पतन के पश्चात् उत्तर भारत में सत्ता कुछ समय के लिये मुरुण्डों के हाथों में आई। फिर मुरुण्डों से गुप्तों ने सत्ता ग्रहण की।

संभवत: गुप्त लोग कुषाणों के अधीनस्थ शासक अथवा सामंत रहे थे। उनकी सफलता का महत्त्वपूर्ण कारण वह सैन्य तकनीक थी जो उन्होंने कुषाणों से ग्रहण की। बिहार और उत्तर प्रदेश में अनेकों जगह कुषाण पुरावशेषों के मिलने के ठीक बाद गुप्त पुरावशेष मिले हैं। गुप्तकालीन पुरावशेषों की प्राप्ति की दृष्टि से उत्तर प्रदेश सबसे समृद्ध स्थान सिद्ध होता है। संभवत: वे अपनी सत्ता का केंद्र प्रयाग को बनाकर पड़ोस के इलाकों में फैलते गए। गुप्त वंश के इतिहास की जानकारी के लिये साहित्यिक स्रोत के रूप में पुराण, स्मृतियाँ, बौद्ध ग्रंथ, विशाखदत्त कृत देवीचंद्रगुप्तम् एवं कालिदास की रचनाएँ प्रमुख हैं। विष्णु पुराण से गुप्त वंश के प्रारंभिक इतिहास की जानकारी मिलती है। **विशाखदत्त** की रचना **देवीचंद्रगुप्तम्** से गुप्त शासक रामगुप्त एवं चंद्रगुप्त द्वितीय के बारे में जानकारी मिलती है। विदेशी यात्रियों में चीनी यात्री फाह्यान का नाम प्रमुख है जो चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में भारत आया था।

पुरातात्त्विक स्रोतों के रूप में समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति, चंद्रगुप्त द्वितीय के उदयगिरि गुहालेख (जिससे उसके साम्राज्य विजय का ज्ञान होता है), स्कंदगुप्त के भीतरी स्तंभलेख (जिससे हूण आक्रमण की जानकारी मिलती है) आदि प्रमुख हैं।

9.1 प्रारंभिक शासक *(Early Rulers)*

गुप्त राजवंश का प्रथम शासक श्रीगुप्त था। श्रीगुप्त के बाद उसका पुत्र घटोत्कच गुप्त वंश का दूसरा शासक हुआ।

चंद्रगुप्त-प्रथम (319 ई. – 334 ई.) *[Chandragupta-I (319 A.D. – 334 A.D.)]*

गुप्त वंश का पहला प्रसिद्ध शासक **चंद्रगुप्त प्रथम** हुआ। वह ऐसा **प्रथम** शासक था जिसने **महाराजाधिराज** की उपाधि धारण की तथा स्वर्ण सिक्के जारी किये। इसके राज्यारोहण (319 – 320 ई.) के साथ **गुप्त संवत्** का आरंभ माना जाता है।

चंद्रगुप्त प्रथम ने गुप्त साम्राज्य का आरंभिक विस्तार किया, फिर अपनी स्थिति को मज़बूत करने के लिये उसने कूटनीतिक पद्धति का भी सहारा लिया। उसने उत्तर भारत के प्रमुख राज्य **लिच्छवि** की राजकुमारी **कुमार देवी** के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किया। इसी विवाद का स्मृति में स्वर्ण सिक्कों का निर्गमन किया।

समुद्रगुप्त (335 ई. – 380 ई.) *[Samudragupta (335 A.D. – 380 A.D.)]*

चंद्रगुप्त प्रथम के पुत्र और उत्तराधिकारी **समुद्रगुप्त** (335 – 380 ई.) ने गुप्त साम्राज्य का अपार विस्तार किया। इसको प्रयास अभिलेख में लिच्छवी दौहित्र (लिच्छवीयों का नाती) कहा गया है।

समुद्रगुप्त एक महान साम्राज्यवादी था। उसने कई चरणों में अपना विजय अभियान पूरा किया। समुद्रगुप्त के विजय अभियान को पाँच चरणों में बाँटा जा सकता है। प्रथम चरण में उसने गंगा-यमुना दोआब के राज्यों का समूल नाश किया तथा प्रत्यक्ष रूप से अपने साम्राज्य में मिला लिया। द्वितीय चरण में उसने पंजाब के गणराज्य तथा कुछ सीमावर्ती राज्यों को जीता। जो गणराज्य मौर्य साम्राज्य के खण्डहरों पर टिमटिमा रहे थे, उन्हें समुद्रगुप्त ने सदा के लिये बुझा दिया। तीसरे चरण में उसने विंध्य क्षेत्र में आटविक राज्यों पर विजय प्राप्त की। फिर चौथे चरण में उसने दक्षिण के बारह राज्यों को जीता। दक्षिण में उसने पल्लवों से अपनी प्रभुसत्ता स्वीकार कराई। अंतिम चरण में उत्तर-पश्चिम में कुछ विदेशी राज्यों को पराजित किया। उसकी बहादुरी एवं युद्ध कौशल के कारण ही **वी.ए. स्मिथ** ने उसे **भारत का नेपोलियन** कहा है। हालाँकि समुद्रगुप्त की विजयों की सूचना का आधार **हरिषेण** लिखित प्रयाग प्रशस्ति है, यहाँ ध्यान देने योग्य बात है कि हरिषेण एक दरबारी

अध्याय
10

गुप्तोत्तर काल (Post-Gupta Age)

गुप्त वंश के पतन के बाद भारतीय प्रायद्वीप के राजनीतिक इतिहास में नवीन प्रवृत्ति का आविर्भाव हुआ। इस प्रवृत्ति में विकेंद्रीकरण और क्षेत्रीयता की भावना का प्रादुर्भाव था। 550 ई. के लगभग गुप्त साम्राज्य के विखंडित होने के साथ ही कई सामंतों एवं शासकों ने अपनी स्वतंत्रता घोषित करते हुए नवीन राजवंशों की स्थापना की।

10.1 प्रमुख राजवंश *(Major Dynasty)*

गुप्तोत्तर काल की एक अन्य महत्त्वपूर्ण गतिविधि भारत में इस्लाम धर्म का प्रवेश था, जो अरबों के माध्यम से हुआ। हर्षवर्धन के रूप में सशक्त शक्ति का उदय होने तक उत्तरी तथा पश्चिमी भारत की राजनीति में अनेक छोटे-छोटे राजवंशों का उदय हुआ।

प्रमुख राजवंश

- वल्लभी का मैत्रक वंश
- मालवा का यशोधर्मन
- पंजाब के हूण
- मगध और मालवा के उत्तरगुप्त
- कन्नौज का मौखरि वंश
- थानेश्वर का पुष्यभूति (वर्धन) वंश

वल्लभी का मैत्रक वंश *(Maitraka dynasty of Vallabhi)*

मैत्रक वंश का उदय गुजरात के वल्लभी में हुआ। इस वंश की स्थापना भट्टार्क नामक गुप्तकालीन सैनिक अधिकारी के द्वारा की गई। इस वंश के शासक बौद्ध धर्म में आस्था रखते थे। भट्टार्क के उत्तराधिकारियों ने सौराष्ट्र (काठियावाड़) में शक्तिशाली राज्य स्थापित किया। भट्टार्क के उत्तराधिकारियों में धरसेन, द्रोणसिंह और ध्रुवसेन प्रमुख शासक थे। इस वंश के शासकों ने अपनी **राजधानी वल्लभी** को बनाया, **ध्रुवसेन द्वितीय** इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था। यह हर्षवर्धन का समकालीन था। हर्ष ने अपनी पुत्री का विवाह ध्रुवसेन द्वितीय से कर मैत्रकों से संबंध स्थापित किये। ध्रुवसेन के काल में वल्लभी शिक्षा तथा व्यापार-वाणिज्य का प्रमुख केंद्र था। इसी समय चीनी यात्री ह्वेनसांग ने **वल्लभी की यात्रा** की थी। मैत्रक वंश का अंतिम शासक शिलादित्य था।

वल्लभी विश्वविद्यालय

इतिहास का अवलोकन करने के उपरांत भारत का सबसे पुराना विश्वविद्यालय तक्षशिला तथा सबसे विख्यात विश्वविद्यालय नालंदा को माना जाता है, परंतु वल्लभी विश्वविद्यालय की अपनी अलग पहचान थी। ऐसा कहा जाता है कि यहाँ के विद्यार्थी प्रशासनिक पदों पर सबसे अधिक नियुक्त होते थे। चीनी यात्री इत्सिंग सातवीं शताब्दी में वल्लभी आया तथा इस शिक्षा केंद्र की प्रशंसा की। यहाँ के आचार्यों में 'गणभूति' और 'स्थिरमति' का नाम उल्लेखनीय है।

मालवा का यशोधर्मन *(Yashodharman of Malwa)*

मालवा के यशोधर्मन राज्य का उदय छठी शताब्दी के आरंभिक काल में हुआ। यशोधर्मन की उपलब्धियों का वर्णन हमें मंदसौर के दो अभिलेखों से प्राप्त होता है। मंदसौर प्रशस्ति यशोधर्मन का चित्रण उत्तर भारत के चक्रवर्ती शासक के रूप में करती है। यशोधर्मन द्वारा हूणों की पराजय उसकी महानतम उपलब्धियों में से एक थी। यशोधर्मन का राज्य पूर्व में लौहित्य (ब्रह्मपुत्र नदी) से लेकर पश्चिम में समुद्र पर्वत तक विस्तृत था। मंदसौर प्रशस्ति में उसे 'जनेंद्र' कहा गया।

यशोधर्मन का दूसरा नाम विष्णुवर्धन था। उसने राजाधिराज, परमेश्वर और नराधिपति की उपाधि धारण की थी। **वह शिवभक्त था।** अभिलेखों में उसके अच्छे शासन और सद्गुणों के कई उल्लेख हैं। उसकी तुलना मनु, भरत, अलर्क और मांधाता से की गई है। यशोधर्मन ने अपने शिलालेखों में अपने को औलिकरवंशी तथा सूर्यवंशी इक्ष्वाकु का वंशज कहा है। यशोधर्मन के

अध्याय
11

दक्षिण भारत (South India)

प्राचीन भारतीय इतिहास में गुप्तकाल के पतन के बाद राजनीतिक गतिविधियों के केंद्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। एक ओर मगध जो अभी तक राजनीति का प्रमुख केंद्र था, अब उसकी महत्ता समाप्त हो गई, वहीं दूसरी ओर आगामी 200 वर्षों तक संपूर्ण उत्तरी भारत अस्थिर रहा। यद्यपि हर्ष ने कुछ समय तक स्थिरता प्रदान करने का प्रयास किया था, परंतु लगभग 550-750 ई. के काल में राजनीति का केंद्र दक्षिण भारत हो गया, जो दो मुख्य राजवंशों चालुक्य एवं पल्लव का प्रमुख संघर्ष स्थल था।

11.1 चालुक्य वंश *(Chalukya Dynasty)*

चालुक्य वंश प्राचीन दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राजवंश था। इस वंश ने 750 ई. तक (लगभग 200 वर्षों तक) दक्षिण भारत के इतिहास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। चालुक्य सातवीं सदी में अपने महत्तम विस्तार के समय में वर्तमान समय के पश्चिमी महाराष्ट्र, दक्षिणी मध्य प्रदेश, तटीय दक्षिणी गुजरात तथा पश्चिमी आंध्र प्रदेश में फैला हुआ था। चालुक्य लोग स्वयं को **ब्रह्मा, मनु या चंद्र के वंशज मानते थे।** अपनी वैधता व प्रतिष्ठा को अर्जित करने के लिये उन्होंने अपने पूर्वजों को अयोध्या का पूर्व शासक भी घोषित किया। आगे चलकर ये चार प्रमुख शाखाओं में बँट गए जिनमें बादामी (वातापी) के चालुक्य, कल्याणी के चालुक्य (पश्चिम), वेंगी के चालुक्य तथा अन्हिलवाड़ा (लाट) के सोलंकी चालुक्य शामिल थे।

चालुक्यों की उत्पत्ति के संदर्भ में विवाद है। ऐसा माना जाता है कि वे प्रारंभ में कदंब राजाओं की अधीनता में कार्य करते थे। चालुक्यों की मूल शाखा बादामी या वातापी के शासकों ने छठी से आठवीं शताब्दी के मध्य शासन किया, तत्पश्चात् वेंगी व कल्याणी के चालुक्य प्रमुख शक्ति के रूप में उभरे। चालुक्य वंश के संस्थापक वैसे तो जयसिंह थे, परंतु वास्तविक **संस्थापक पुलकेशिन प्रथम** को माना जाता है। इस वंश का **सबसे शक्तिशाली शासक पुलकेशिन द्वितीय** था। अपने समकालीन पल्लव शासकों से संघर्ष के कारण चालुक्य शासकों की शक्ति क्षीण होने लगी और इनके सामंत शक्तिशाली बनने लगे। ऐसे ही एक सामंत **दंतिदुर्ग** ने वातापी के **चालुक्यों** के **शासन** को **समाप्त कर राष्ट्रकूट राजवंश की नींव डाली।**

सामान्य परिचय (General introduction)

वास्तविक संस्थापक : पुलकेशिन प्रथम (550 – 567 A.D)
प्रारंभिक राजधानी: बादामी या वातापी वर्तमान बीजापुर (कर्नाटक)
सबसे शक्तिशाली शासक: पुलकेशिन-द्वितीय

पुलकेशिन द्वितीय (Pulakeshin-II)

- इसने 609 ईसवी से 642 ई. तक शासन किया।
- उत्तरी कोंकण के मौर्य शासकों, मैसूर के गंग व वेंगी के पल्लवों को पराजित किया।
- कदंब, चोल, केरल, लाट, मालवा व गुर्जर प्रदेशों को जीतकर उत्तर में माही नदी तक अपने राज्य का विस्तार किया।
- नर्मदा तट पर हर्ष को पराजित कर **'परमेश्वर'** की उपाधि धारण की।
- उसने पर्सिया के शासक खुसरो द्वितीय के दरबार में एक दूतमंडल भी भेजा था।
- पुलकेशिन के बाद उसका पुत्र विक्रमादित्य-प्रथम शासक बना।
- इससे संबंधित जानकारी ऐहोल अभिलेख से मिलती है।

चालुक्यकालीन राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक स्थिति *(Political, economic and social status of Chalukyan)*

राजनीतिक और प्रशासनिक स्थिति (Political and administrative status)

वातापी या बादामी के चालुक्यों ने लगभग दो शताब्दियों तक दक्षिण भारत पर शासन किया। वे मूलत: धर्मनिष्ठ हिंदू थे और उन्होंने धर्मशास्त्रों के अनुसार शासन किया। प्राचीन शास्त्रों में विहित राजतंत्र प्रणाली इस काल में भी सर्वप्रचलित

अध्याय
12

भारत का एशियाई देशों से सांस्कृतिक संबंध (Cultural Relation of India with Asian Countries)

हड़प्पा काल से ही भारत ने अपने एशियाई पड़ोसी देशों से संपर्क बनाए रखा तथा भारतीय लोगों ने सुदूर देशों की यात्राएँ कीं और वे जहाँ भी गए, वहाँ उन्होंने भारतीय संस्कृति की अमिट छाप छोड़ी। साथ ही ये लोग अन्य देशों से विचार, प्रभाव, रीति-रिवाज़ व परंपराओं को भी अपने साथ लेकर आए। इस प्रसार की सर्वाधिक विलक्षण बात यह थी कि इसका उद्देश्य किसी समाज या व्यक्ति को जीतना या डराना नहीं था बल्कि भारतीय आध्यात्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों से दूसरे लोगों को परिचित कराना था। इस काम के लिये भारत से धर्म प्रचारक, शिक्षक, राजदूत और व्यापारी अन्य देशों में गए।

मौर्य सम्राट अशोक ने भारत के बाहर बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये अथक प्रयास किये। उन्होंने अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा को बुद्ध के संदेशों के प्रचार कार्य के लिये श्रीलंका भेजा। कनिष्क के काल से ही कई भारतीय धर्म प्रचारक चीन, मध्य एशिया और अफगानिस्तान जाकर बौद्ध धर्म का उपदेश देते रहे। चीन से बौद्ध धर्म जापान व कोरिया में भी फैला। फाह्यान तथा ह्वेनसांग जैसे कई चीनी यात्री बौद्ध धर्म-ग्रंथों और सिद्धांतों की खोज में ही भारत आए। उसी समय बौद्धों की एक बस्ती चीन के तुन हुआंग में बस गई। इसी प्रकार भारतीयों ने रेशम उपजाने का कौशल चीन से सीखा और चीनियों ने भारतीयों से कपास पैदा करने का तरीका।

बौद्ध धर्म के प्रचार से भारत के आस-पास अन्य देशों से भी भारत के संबंध सुदृढ़ हुए। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि भारतीय संस्कृति व सभ्यता का प्रसार विश्व के विभिन्न भागों में हुआ, विशेष रूप से मध्य एशिया, पूर्वी एशिया, श्रीलंका व दक्षिण-पूर्व एशिया, बर्मा (म्याँमार), इंडोनेशिया, मलेशिया, कंबोडिया, थाईलैंड तथा पश्चिम एशिया और अरब देशों में। एशिया में भारत के इन सांस्कृतिक संबंधों के विस्तार को हम अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से निम्न चार भागों में बाँटकर देख सकते हैं-

1. मध्य एशिया से सांस्कृतिक संबंध।
2. पूर्वी एशिया से सांस्कृतिक संबंध।
3. श्रीलंका और दक्षिण-पूर्व एशिया से सांस्कृतिक संबंध।
4. पश्चिम एशिया व अरब से सांस्कृतिक संबंध।

मध्य एशिया से सांस्कृतिक संबंध *(Cultural relation with central Asia)*

- मध्य एशिया रूस, मंगोलिया, चीन, तिब्बत, अफगानिस्तान व भारत से घिरा हुआ क्षेत्र है।
- मध्य एशिया में बुद्ध की बहुत-सी मूर्तियाँ और कई विहार मिले हैं। इसमें **बेगराम** व **बामियान** के पुरावशेष विशेष उल्लेखनीय हैं।
- भारत से चीन व चीन से भारत आने-जाने वाले व्यापारियों ने जो मार्ग बनाया, वह आगे चलकर **'सिल्क रूट'** (रेशम-मार्ग) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसे इस नाम से इसलिये बुलाया जाने लगा, क्योंकि इस मार्ग से चीन से रेशम का व्यापार किया जाता था।
- यहीं से होकर रेशम के साथ-साथ बहुमूल्य पत्थर, घोड़े तथा अन्य महत्त्वपूर्ण वस्तुओं का व्यापार हुआ करता था। इस व्यापार मार्ग से धर्म और दर्शन का, आस्था और विश्वास का, भाषा और साहित्य का तथा कला और संस्कृति का प्रसार हुआ,
- इस मार्ग से होकर जाने वाला सबसे अधिक प्रभावशाली तत्त्व बौद्ध धर्म था, जिसका सर्वाधिक प्रसार व प्रभाव हुआ, क्योंकि ज्ञान की खोज में और बौद्ध दर्शन का प्रचार करने के लिये अनेक चीनी और भारतीय विद्वान इस मार्ग से आवागमन करते रहे।
- भिक्षुओं, धर्माचार्यों, व्यापारियों और तीर्थयात्रियों के विश्राम-स्थल आगे चलकर बौद्ध शिक्षा के महत्त्वपूर्ण केंद्र बने।
- मध्य एशिया के देशों से प्राप्त प्राचीन स्तूपों, मंदिरों, मठों, मूर्तियों और चित्रों से यह प्रमाणित होता है कि इन स्थानों व भारत के मध्य संस्कृति का व्यापक आदान-प्रदान हुआ।
- खोतान राज्य (तकलामकान रेगिस्तान के दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक चीनी प्रांत) रेशमी कपड़ा उद्योग, नृत्य और संगीत, साहित्यिक और व्यापारिक गतिविधियों और सोने के व्यापार के लिये प्रसिद्ध एक महत्त्वपूर्ण स्थान था।

अध्याय
13

पूर्व मध्यकालीन भारत
(Pre Medieval India)

भारतीय इतिहास में काल विभाजन एक बहुत बड़ी समस्या रही है। सामान्यत: 8वीं से 11वीं शताब्दी के काल को पूर्व मध्यकाल की संज्ञा दी जाती है। राजनीतिक विकेंद्रीकरण, छोटे-छोटे राज्यों का उदय एवं उनमें आपसी संघर्षरत होना जहाँ इस काल की राजनीतिक स्थिति को दर्शाता है, वहीं बंद अर्थव्यवस्था, सामंती सामाजिक जीवन, धर्म में विविधता इस काल की प्रमुख आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक विशेषता थी।

13.1 पाल, गुर्जर-प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट वंश *(Pala, Gurjar - Pratihar and Rashtrakut Dynasty)*

आठवीं से दसवीं शताब्दी तक का समय भारतीय इतिहास में राजसत्ताओं के त्वरित उत्थान-पतन का काल रहा। इस समय उत्तर भारत और दक्कन में कई शक्तिशाली साम्राज्यों का उदय हुआ। छठी शताब्दी के अंतिम चरण में गुप्त साम्राज्य के पतन के साथ ही इतिहास के एक महान युग का अंत हो गया। इसके साथ ही 1000 वर्षों से राजनीति का केंद्र रहे मगध का महत्त्व भी हमेशा के लिये समाप्त हो गया। संक्रमण के इस काल में उत्तर भारत में कन्नौज राजनीति के आकर्षण का नया केंद्र बनकर उभरा। सातवीं सदी में हर्ष के राज्यारोहण के बाद कन्नौज की सत्ता अपने चरम उत्कर्ष पर थी। हर्ष के शासनकाल तक उत्तर भारत की राजनीतिक सत्ता अक्षुण्ण बनी रही, परंतु 647 ई. में हर्ष की मृत्यु के साथ ही उत्तर भारत में राजनीतिक अराजकता पैदा हो गई। इसी पृष्ठभूमि में नए राजवंशों व राज्यों को उदय होने का अवसर मिला।

कन्नौज पर आधिपत्य को लेकर तीन गुटों में कई वर्षों तक संघर्ष चलता रहा। ये तीन गुट थे- पाल, गुर्जर-प्रतिहार तथा राष्ट्रकूट। इनमें से पाल साम्राज्य का नवीं सदी के मध्य तक पूर्वी बंगाल में बोलबाला रहा। पश्चिमी भारत और ऊपरी गंगा की घाटी में दसवीं सदी तक प्रतिहार साम्राज्य की तूती बोलती थी। उधर दक्कन में राष्ट्रकूटों का वर्चस्व था, जो समय-समय पर उत्तर और दक्षिण भारत के प्रदेशों पर भी अपना नियंत्रण स्थापित कर लेते थे। यद्यपि इन तीनों साम्राज्यों के बीच संघर्ष चलता रहा, तथापि इनमें से प्रत्येक ने काफी बड़े-बड़े क्षेत्रों को स्थिरतापूर्ण जीवन की परिस्थितियाँ प्रदान की और साहित्य तथा कला को संरक्षण दिया। तीनों में सबसे दीर्घायु राष्ट्रकूट साम्राज्य साबित हुआ। इस साम्राज्य ने न केवल विपुल शक्ति अर्जित की, बल्कि आर्थिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में उत्तर और दक्षिण के बीच सेतु का काम भी किया। यहाँ हम पाल, गुर्जर-प्रतिहार तथा राष्ट्रकूट राजवंशों के विषय में क्रमश: अध्ययन करेंगे।

पाल वंश *(Pala Dynasty)*

पाल वंश की स्थापना संभवत: 750 ई. के आस-पास बंगाल (गौड़) में हुई थी। **शशांक** की मृत्यु के पश्चात् लगभग एक शताब्दी तक बंगाल में अराजकता और अव्यवस्था का माहौल बना हुआ था। उस क्षेत्र में फैली अराजकता से तंग आकर वहाँ के लोगों ने **गोपाल** को शासक चुना। यह पहला राजा था, जिसका जनता के द्वारा निर्वाचन हुआ। उसने गौड़ में फिर से सुव्यवस्था स्थापित की तथा करीब दो दशकों तक शासन किया। वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था तथा उसने ओदंतपुरी महाविहार की स्थापना भी की थी। 770 ई. में उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र **धर्मपाल** राजा बना।

धर्मपाल ने बंगाल पर 770 से 810 ई. तक शासन किया। उसने सर्वप्रथम राज्य का विस्तार किया। कुछ समय के लिये उसने कन्नौज पर भी अपना अधिकार स्थापित किया था तथा उसने **'उत्तरापथस्वामिन्'** की उपाधि धारण की। वह बौद्ध धर्मानुयायी था, किंतु वह अन्य धर्मों के प्रति भी सहिष्णु था। बिहार और आधुनिक पूर्वी उत्तर प्रदेश पर अपना-अपना नियंत्रण स्थापित करने के लिये पालों और प्रतिहारों के मध्य संघर्ष चलता रहा। यद्यपि बंगाल के साथ-साथ बिहार पर पालों का ही अधिक समय तक नियंत्रण कायम रहा।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 8750187501, 011-47532596